जूठन : एक समीक्षा

डॉ. रूबी ज़ुत्शी

वरिष्ठ प्रध्यापिका

कश्मीर विश्वविध्यालय श्रीनगर

जूठन ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथात्मक कृति न होकर एक आत्मवृत है क्योंकि आत्मकथा का स्वरूप भिन्न होता है | यह प्राय: वृद्ध लोगों द्वारा लिखी जाती है और जीवन में बड़ी सफल उपलब्धियों को प्राप्त करने वाले लोगों पर लिखी जाती है, जिससे पाठक प्रेरित होते हैं | आत्मवृत प्राय: युवा संघर्षरत लेखकों के आत्मीय अनुभव पर आधारित है जो अपनी मंजिल की खोज में होते हैं और आत्मीय अनुभव जातीय अनुभव से ओतप्रोत है | आत्मकथात्मक लिखना अति कठोर भी है क्योंकि अगर हम अपनी आत्मकथा सच्चाई से लिखेंगे ति कहीं हमे अपनी प्रतिष्ठा खोने की संभावना भी होती है क्योंकि लोग उस चीज़ से परिचित होते हैं जिससे वह अपने हाथों से लिख डालता है और अपनी ही लेखनी से लोगों को परिचित कराता है जिसका जीवंत उदाहरण जूठन आत्मकृतात्मक कृति है | यही कारण है कुछ लोग इसे आत्मकथात्मक समझते हैं | देखा जाए तो यह आत्मवृत है |

'जूठन' शीर्षक का सुझाव श्रद्धेय राजेन्द्र यादव जी ने सुझाया है | इसके अतिरिक्त कँवल भारती, डॉ. श्योराज सिंह 'बेचैन' तथा अशोक महेश्वरी जी की सहायता के बिना यह आत्मवृत लिखना ओमप्रकाश वाल्मीकि के लिए संभव नहीं था | यह दो खण्डों में विभाजित है | अपने आप को विकीर्ण सोच वाले कहने

के उपरान्त भी हम कहीं न कहीं सवर्ण और अवर्ण के दायरे में बंट ही जाते हैं | इस आत्मवृत कृति को केंद्र बिंदु का दायरा यही है | सन् १९९४ में राजकिशोर 'हरिजन से दलित पुस्तक लिखने की योजना कर रहे थे तो उन्होंने ओमप्रकाश जी को कुछ पन्ने लिखने के लिए विवश किया और उन्होंने विवशता में कुछ पन्ने लिख ही डाले और राजकिशोर के पास भेज दिये, उपरोक्त किताब का शीर्षक 'एक दलित की आत्मकथा' जिसको दलितों ने बहुत ही सराहा और लेखक को प्रोत्साहित करते रहे जिससे ओमप्रकाश तत्पश्चात निरंतर लिखते रहे |

अगर जाति-व्यवस्था की बात करें तो भारतवर्ष में चार जातियाँ थीं- ब्राह्मण, क्षेत्रीय, वेश्य एवं शूद्र | उस समय केवल शूद्र को ही दलित अर्थात हरिजन माना जाता था किन्तु धीरे-धीरे यह धारणा परिवर्तित हो गई | हरिजन से दलित, दलित का अरथ है जिन लोगों का समाज में दलन होता है | उनको हम दलित के भीतर रख सकते हैं क्योंकि आरक्षण का फल केवल हरिजन को ही नहीं बल्कि अगर उच्च जाति का भी कोई दरिद्रता झेलता होगा, खाने की सुविधा नहीं होगी तो उनको भी आरक्षण का पूरा-पूरा लाभ मिलना चाहिए, यही कारण है आज दलित के संदर्भ में वे सभी परिवार आते हैं जो गरीबी रेखा से नीचे (बी.पी.एल, below poverty line) के अंतर्गत आते हैं |

आज आरक्षण के भीतर वह लोग भी होते हैं जिनके पास अपनी ज़मीनें नहीं हैं, निम्न सत्ता के लोगों को संसार में किसी भी प्रकार का आदर-सत्कार नहीं मिलता है | जो बहुत बड़ी विडम्बना है | सवर्ण अवर्ण लोगों के साथ सदा अन्याय करते आये हैं "उम्र में बड़ा हो तो 'ओ चूहड़े' या उम्र में छोटा हो तो

'अबे चूहड़े' के" |1उच्चजाति तथा पूंजीवादी लोग मुर्गी, कुत्ते तथा बिल्ली को पाल सकते हैं, अपने बिस्तर पर लेटा सकते हैं, उसकी सेवा कर सकते हैं तब न उनके बर्तन झूठे होते हैं और न घर किन्तु अगर निम्नवर्ग का जन उनके घर में बिस्तर या बर्तन का प्रयोग करेगा तो उसको जलाया जाता है और बर्तन को घर से बाहर रखा जाता है- "काम पूरा होते ही उपयोग ख़त्म इस्तेमाल करो दूर फेंको" |2 स्वतंत्रता से पूर्व उनकी स्थिति अति बिगड़ी हुई थी किन्तु स्वतंत्रता के बाद ही सबसे पहले गांधीजी ने ही सरकार में अछूतोद्वार खोले थे किन्तु अगर यह अच्छे कपडे स्कूल पहन कर जाते थे तो त्यागियों (मुसलमान/हिंदू) का व्यवहार उनके प्रति सही नहीं होता था | ताने मार-मार के उनके भीतर तक छेद कर डालते थे- "अबे चूहड़े का, नये कपड़े पहनकर आया है | मैले-पुराने कपड़े पहनकर स्कूल जाऊं तो कहते, 'अबे चूहड़े के दूर हट, बदबू आ रही है" |3 उस उच्च जातीय या ब्राह्मण का क्या अर्थ है जो समाज को बनाने से बिगाड़ ही दे क्योंकि शिक्षक वह है जिसमें सहानुभूति, सहनशीलता, नम्रता तथा ज्ञान हो और सभी छात्रों को एक समान समझ रखे जिसके मन में भेदभाव एवं घृणा न हो और हाथ में शमशेर लेकर चौबीस घंटे खड़ा रहे वह शिक्षक नहीं जल्लाद है- "एक दिन मास्टर ने सुखन सिंह को पीटते समय उस फोड़े पर ही एक घूँसा जड़ दिया, सुखन को दर्दनाक चीख निकली, फोड़ा कूट गया था उसे तड़पता देखकर मुझे भी रोना आ गया था" |4 ब्राह्मण को न गाली देने का अधिकार है और न किसी को मारने का अधिकार बल्कि समाज को परामर्श देकर सुधारने का काम करना चाहिए | आज सरकार ने तरह-तरह के क़ानून बनाए उससे लोगों की आँखें खुल गई | आज हर किसी

के लिए एक व्यवस्था बनी हुई है | उस व्यवस्था का अगर कोई उल्लंघन करे तो उसी समय उसको कारावास की मार खानी पड़ती है क्योंकि देखने एवं जांचने के लिए एक-एक कमेटी बनी हुई है | अंधाक़ानून तथा अन्धाराज कब का समाप्त हो चूका है | एक युग यह भी था जब "सुंदर लड़के के गाल सहलाते थे उन्हें अपने घर बुलाकर उनसे वाहियातपन करते थे" |5 आज बालिका भी अपने देह की रक्षा करने में सतर्क है देखा जाए तो माँ के पेट में कोई भी धर्म तथा जाति से भिग्य नहीं होता है इस भूमि पर पैर रख कर हमें जाति तथा धर्म से बांधा जाता है | जिस धर्म एवं जाति की माँ होती है उस धर्म तथा जाति से बच्चा भी सम्बंधित होता है | अब उन्हीं बच्चों को सताए क्यों- "पूरे स्कूल कू ऐसा दे जैसा सीसा | तेरी तो यो खानदानी काम है" |6 हेडमास्टर उच्च जाति का होने के कारण उनकी भाषा चूहड़ जाति वालों से अच्छी नही थी बात से पहले ही वह उनको गाली से पुकारते थे- " मादरचोद कहाँ घुस गया...अपनी माँ..." |7 इस संसार में एक माँ का अस्तित्व बहुत ऊँचा एवं पवित्र है | इससे असभ्य कौन हो सकता है जो किसी की भी माँ को अपशब्द कहने में चूक न करे |

अगर निम्नजाति के लोगों को उच्च-जाति के लोग सहयोग प्रदान न करें तो उनको ऊपर उठाने का कोई भी अवसर नहीं मिलेंगे विशेषतौर पर पढाई के क्षेत्र में- "तीन दिन से रोज़ झाड़ू लगवा रहे थे | कक्षा में पढ़ने भी नहीं देते हैं" |8 जब तक हम सभी प्रधान संगवा सिंह त्यागी नहीं बनेंगे तब तक समाज-सुधार नहीं होगा | विडम्बना की बात यह है कि चना की कटाई बहुत ही कष्टदायक होती है क्योंकि चना के पत्तों पर खटाई होती है |

काटने पर पूरे शरीर में चिपक जाती है | यह चिपचिपाहट नहाने से भी कम नहीं होती है तो सवर्ण यह स्वयं न काट कर इसकी "कटाई करने वाले अधिकतर चूहड़ या चमार हो होते हैं" |9 कारण केवल जाति तथा दरिद्रता है वर्ना सबका शरीर एक जैसा है |

इस आत्मवृत का शीर्षक एकदम सही एवं सटीक है क्योंकि "दोपहर से प्रत्येक घर से एक बच्ची-खुच्ची रोटी, जो खासतौर पर चूहडो को देने के लिए आते में भूसी मिलाकर बनाई जाती थी | कभी-कभी जूठन भी भंगन को टोकरी में डाल दी जाती थी" |10 दिन-रात मर खपकर भी हमारे पसीने की कीमत मात्र 'जूठन' ही होती है किन्तु इस जूठन से वह अपनी जीविका चलाते थे | अगर इनको यह 'जूठन' भी नहीं मिलती तो उनके लिए खाने-पीने का कोई भी साधन नहीं होता था | जूठन इनके लिए गंगा नहान जैसे था | 'जूठन' से भी इनके घर पलते थे | 'जूठन' खाने पर भी हिन्दू इनको लताड़ते थे और इनको अपमानजनक होना पड़ता था "टोकरी भर तो जोथान ले जा रही है...ऊपर से जाकतो (बच्चों) के लिए खाणा मांग रही है ? अपनी औकात में रह चूहड़ी" |11 जसबीर और जनेसर माँ को काम में हाथ बंटाते थे इस दिन जब सुखदेव सिंह ने इनकी माँ पर हाथ उठाने की हिम्मत की तो वः दुर्गा बन कर जवाब देकर निकल पड़ी और कभी भी उनके दरवाज़े पर नहीं गई और उसी दिन से जूठन का सिलसिला भी समाप्त हुआ |

पहले गाँव की बेटी को सारे गांवों वाले अपनी बेटी समझ कर उसके प्रति विशेष ध्यान देते क्योंकि बेटी का सम्मान गाँव का सम्मान माना जाता था बेटी की शादी का मतलब गाँव भर की इज्ज़त का सकल था | किन्तु आज इतना विनाशशील

परिवर्तन आया है आज उसी गाँव में लड़के अपनी ही गाँव की लड़की का बलात्कार करने में कोई हिचक नहीं करते हैं | यह विनाशकारी विकास नहीं तो और क्या है |

पहले गाँव में लोग अधिक शिक्षित न होकर अपनी अशिक्षित सोच के कारण काले जादू-टोने-टोटकों के प्रति अधिक जागरूक होते थे जिससे अपने बच्चों को किसी दूसरी जगह न कमाने भेजते थे न घर से ही बाहर निकलने का परामर्श देते थे | इसी कारण वह अपनी गरीबी दूर नहीं कर पाते थे बल्कि उसको अपने घर में ही गरीबी पाल लेते थे जिससे आर्थिक विकास न के बराबर होता था | समय के साथ-साथ हर तरह का विकास तथा परिवर्तन होता आया है | लोगों की मानसिकता में परिवर्तन आया है | आज नौकरी तो क्या पढ़ाई के लिए भी बच्चों को घर से दूर भेजते हैं |

आज निजी नौकरी करने का प्रचलन चल रहा है | इक्कीसवीं सदी के युवक बड़े शौक तथा उत्साह के साथ निजी नौकरी करना पसंद करते हैं क्योंकि काम बेशक अधिक है बल्कि वेतन तिगुणा होता है | सरकारी नौकरी में आराम अगर अधिक है किन्तु वेतन भी उसी मात्र में होता है | लेकिन आज के बच्चों को इस शाश्वत सत्य की पहचान नहीं है | निजी तथा सरकारी नौकरी में घोर अंतर यही है "बंधी-बधाई आमदनी व्यक्ति को हौसला देती है | उसमें आत्मविश्वास पनपने लगता है" |12 किन्तु निजी नौकरी में यह चीज़ें नहीं होती है न ही बंधी-बंधाई आमदनी ही होती है न ही आत्मविश्वास ही जागृत होता है क्योंकि कभी भी वक्त निजी कर्मचारी को नौकरी से निकाल सकते हैं और दुर्भाग्यवश अगर किसी समय बीमारी का शिकार हुआ तो खोटे सिक्के की भांति

बेकार ही जाता है और ज़िन्दगी उसके लिए बोझ बन जाती है जो कि सरकारी नौकरी में नहीं है | वह मरते दम तक सरकार के कन्धों पर सवार होता है | मन्नू भंडारी की कहानी 'खोटे सिक्के' भी इसी समस्या को लेकर लिखी गयी है |

आज से कुछ साल पहले एक ही अध्यापक जो केवल मैट्रिक पास होने के उपरान्त भी सारे विषय पढ़ाते रहते थे चाहे उसको विभिन्न विषयों पर ज्ञान होता था या नहीं, फिर भी एक ही टीचर स्कूल में हुआ करता था जो प्रत्येक विषय का ज्ञान देता था किन्तु समय का बदलाव इस विषय में भी आया है | आज हर विषय के लिए अपना-अपना विशेषग्य होता है जिससे बेरोज़गारी भी दूर होती है और बच्चे सही ज्ञान की प्राप्ति भी करते हैं |

उच्च जातीय की उपेक्षा निम्न जातियों में रिश्ते बड़े ही मूल्यवान होते हैं | वह अपने किसी भी रिश्ते के लिए कोई भी मूल्यवान चीज़ बेचने में और दूसरे रिश्ते की ज़िन्दगी बनाने में सक्षम होते हैं | चाहे वह ससुराल का ही सदस्य क्यों न हो "ना बहू...इसे ना बेच...मैं कुछ न कुछ कर के इसे स्कूल भेजूंगी | तू फ़िक्र ना कर...एक यही तो चीज़ है तेरे पास....उसे भी बेचे दे, रख ले उसे" |13 जसबीर भाभी से लिपट कर रोया और आस-पड़ोस की औरतें मेरी भाभी के इस स्नेह को देखकर अभिभूत हो गयी | अम्बेडकर ने सही कहा है First education, then organize and then agitate क्योंकि पढाई से मानव में आत्मविश्वास उत्पन्न होता है "अर्धवार्षिक परीक्षा में मैं अपने सेक्शन में प्रथम आया था | इस परिणाम ने मेरे भीतर आत्मविश्वास जगा दिया" |14

दरिद्र लोग पांच सौ रुपए एक किलो बकरी का मांस लेकर अपने परिवार को बड़ा तथा स्वादिष्ट खाना नहीं खिला सकते है इसलिए पहले से ही यह प्रावधान रखा गया है कि ऐसे मांस को हलाल बना दिया है जो दरिद्र लोग अपने परिवार जनों के लिए ला सकते हैं और उनको भी बड़ा खाना खिला सकते हैं किन्तु इसका फायदा सवर्ण भी धर्म का आवश्यक अंग मानकर इसको खा लेते हैं किन्तु इन छोटे लोगों को अपने से कमत्तर मानकर उन्हें भला-बुरा कहते हैं- "अबे चूहड़ के सूअर खाता है" |15 तब इन छोटे लोगों को याद आता है यह सवर्ण परदे के पीछे क्या करते हैं जब यह अँधेरे में छुप-छुप कर गोश्त खाते हैं |

निष्कर्षत: इस आत्मवृत में कई और सामाजिक समस्याओं को भी प्रस्तुत किया गया है जो वर्तमान समय की जीवंत समस्याएँ हैं |

संदर्भ ग्रन्थ सूची :-

१. ओमप्रकाश वाल्मीकि: आत्मकथात्मक उपन्यास:जूठन: पृष्ठ 12 पहला खंड:राधाकृष्ण नयी दिल्ली, इलाहबाद कोलकत्ता

२. वही पृष्ठ 12

३. वही पृष्ठ 13

४. वही पृष्ठ 14

५. वही पृष्ठ 14

६. वही पृष्ठ 15

७. वही पृष्ठ 15

८. वही पृष्ठ 16

९. वही पृष्ठ 18

१०. वही पृष्ठ 19

११. वही पृष्ठ 21

१२. वही पृष्ठ 25

१३. वही पृष्ठ 26

१४. वही पृष्ठ 29

१५. वही पृष्ठ 30

दलित आत्म्वृतों में समाज समीक्षा: चमनलाल गुप्त, पृष्ठ 1. परिशोध: पत्रिका: हिंदी विभाग पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़